एड्स का सामना कैसे करें?

एड्स वायरस का सामना करने की दिशा में एक सुझाव यह दिया गया है कि सब लोगों का एच.आई.वी. परीक्षण करो, और जिसमें भी वायरस मिले उसका तत्काल उपचार करो। विश्व स्वास्थ्य संगठन के चार्ल्स गिल्क्स और उनके साथियों ने अपनी गणनाओं के आधार पर कहा है कि इस तरीके से करेंगे तो जल्दी ही दुनिया में एड्स वायरस का प्रकोप बहुत कम करने में मदद मिलेगी। वैसे उन्होंने अपने इस अध्ययन में दक्षिण अफ्रीका पर विशेष ध्यान दिया है।

उन्होंने यह अनुमान लगाने का प्रयास किया कि वायरस से संक्रमित हर व्यक्ति को एंटी-रिट्रेवायरल (एआरवी) दवाई देने का क्या प्रभाव होगा। दक्षिण अफ्रीका में वायरस संक्रमण की दर काफी ऊंची है। गिल्क्स व उनके सहयोगियों का अनुमान है कि यदि सारे संक्रमित लोगों को एआरवी दी जाए, तो 10 साल के अंदर वहां की संक्रमण दर 20 प्रति हज़ार से घटकर 1 प्रति हज़ार रह जाएगी। इस तरह के नाटकीय असर का कारण यह है कि एआरवी रक्त में वायरस की संख्या को काबू में रखती है। इसके चलते व्यक्ति कम संक्रामक होता है, चाहे वह असुरक्षित यौन सम्बंध भी बनाए।

सवाल है कि इस तरह के कार्यक्रम की लागत क्या होगी? गिल्क्स का विचार है कि शुरुआत में यह काम बहुत महंगा होगा मगर 10 सालों के अंदर यह उस पद्धति के मुकाबले सस्ता साबित होगा जिसके अंतर्गत सिर्फ उन लोगों का इलाज किया जाता है जिनमें एड्स के लक्षण नज़र आते हैं। इसका कारण यह है कि उस समय तक बड़ी संख्या में लोगों में एड्स के लक्षण प्रकट होने लगेंगे। उनका यह भी कहना है कि इस तरह की रणनीति का सबसे ज़्यादा असर विकासशील देशों में देखने को मिलेगा जहां फिलहाल मात्र सुरक्षित यौन सम्बंधों पर ही ज़ोर दिया जा रहा है।

वैसे इस विचार को लेकर कई सारे नैतिक सवाल उठे हैं और व्यक्ति की निजता के सवाल भी हैं। क्या किसी व्यक्ति की जबरन जांच करना उचित कहा जा सकता है? ***(स्रोत फीचर्स)***